मिथिला-भारती, अंक १, भा० ३-४ (१९६९) मे मुद्रित

सुकवि सदानन्दक पाँच गोट गीत

प्रो० रामदेव झा

सुकवि सदानन्दक पाँच गोट गीत

रामदेव झा

सुकवि सदानन्द मैथिली साहित्य मे अल्प परिचित व्यक्ति थिकाह। हिनक एक गोट देवी-वन्दनाक गीत रागतरंगिणी मे उपलब्ध अछि।[1] ओहि गीतक आधार पर, डॉ० जयकान्त मिश्र १५२७ सँ १७०० ई० मे ऊद्भूत विद्यापतिक अनुसरणकर्त्ता कवि मे हिनक उल्लेख कयने छथि।[2] रागतरंगिणीक रचना लोचन कवि १६०७ शाके (१६८५ ई०) मे अथवा ओहि सँ पहिने कयने छलाह।[3] अतः ओहि सँ बहुत पहिनहि सुकवि सदानन्द आविर्भूत भेल होयताह। एहि आधार पर 'हिन्दी साहित्य और बिहार' नामक ग्रन्थ मे हिनका सतरहम शताब्दी मे उद्भूत किन्तु अज्ञात परिचयक कविगण मे स्थान देल गेल छनि।[4]

जगज्ज्योतिर्मल्ल विरचित हरगौरी विवाह नाटक मे सदानन्द कविक दुइ गोट गीत उद्धृत कयल गेल अछि।[5] हरगौरी विवाहक रचना १६२९ ई० मे भेल छल।[6] अतः सदानन्द कवि ओहि सँ कम सँ कम सत्तरि-अस्सी वर्ष पूर्व अवश्ये भेल होयताह। अतः हिनक समय १५५० सँ १६५० ई०क बीच मे मानब समीचीन लगैत अछि।

विभिन्न स्रोत सँ जे अनेक गीत सभ उपलब्ध भेल अछि ताहि सँ लगैत अछि जेना सदानन्द कवि अत्यन्त लोकप्रिय कवि छलाह। से यदि नहि रहैत तँ विभिन्न संग्रह ग्रन्थ मे हिनक गीत सभ संकलित नहि रहैत। किन्तु जतबा गीत उपलब्ध भेल अछि ताहि सभक भणिताक पंक्ति मे कतहु कोनो आश्रयदाताक नाम आदिक उल्लेख नहि भेटैत अछि। ताहि सँ एखन यैह अनुमान कए सकैत छी जे ओ कोनो राज्याश्रय मे नहि रहि स्वतन्त्र जीवन-यापन करैत काव्यरचना करैत छलाह। कतिपय गीत मे ई 'सुकवि' विशेषणक प्रयोग कयने छथि ताहि सँ अनुमान होइत अछि जे समाज मे हिनक काव्य-पाटवक मान्यता प्राप्त छलनि। प्राप्त गीत सभक छन्द ओ भाषाक विन्यास मे जे प्रौढ़ता अछि से एहि तथ्य केँ पुष्ट करैत अछि।

---

१ रागतरंगिणी—सं० राजपण्डित बलदेव मिश्र, राजप्रेस, दरभंगा, पृ० ११२

२ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग-१, पृ० २४१

३ तत्रैव, पृ० २३१

४ हिन्दी साहित्य और बिहार (प्रथम खण्ड)—सं० शिवपूजन सहाय, बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद्, पटना, १९६०, पृ० १८८

५ हरगौरी विवाह नाटक—कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयक अतिरिक्त हस्तलिखित पोथी, क्रम संख्या—११९५

६ तत्रैव, पुष्पिका वाक्य—सम्वत् ७४९ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्य्यग्रासस, श्री श्री जगज्ज्योतिर्मल्लदेव प्रभु ठाकुरसन तुलादान, थ्व हरगौरी विवाह प्याखन दय का जुरो ॥

सुकवि सदानन्दक जे गीत सभ उपलब्ध भेल अछि ताहि मे भक्ति ओ शृंगार उभय विषयक गीत सभ अछि। भक्ति विषयक गीत मे देवी दुर्गा ओ भवानी-शंकरक वर्णन भेटैत अछि।

एखन धरि सुकवि सदानन्दक रागतरंगिणी मे उद्धृत एकमात्र गीत लोकक दृष्टि-पथ पर छल। किन्तु अनुसन्धान सँ चारि गोट गीत और उपलब्ध भेल अछि। एहि मे दुइ गोट उपर्युल्लिखित हरगौरी विवाह नाटक मे उद्धृत अछि। दुनू शिव विषयक गीत अछि। एकटा मेनाक द्वारा कहाओल गेल अछि जाहि मे शंकरक रूप ओ गौरीक प्रति पूर्वरागक वर्णन अछि।[७] दोसर गीत मे महादेवक नृत्यक वर्णन कयल गेल अछि।[८]

डॉ० जयकान्त मिश्र नेपालक राजगुरु हेमराज शर्माक पुस्तकालय मे रक्षित तथाकथित कंसनारायण पदावली मे सदानन्द कविक एकटा गीत होयबाक सूचना देने छथि।[९] वस्तुतः ओहि पदावलीक नाम 'भाषा गीत संग्रह' थिक जकरा आब नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय (पूर्वक वीर पुस्तकालय) मे स्थानान्तरित कए देल गेल अछि। ओहि मे यमुनापार जाइत काल कृष्णक प्रथम दर्शन सँ भेल गोपीक विरह ओ मनोदसाक वर्णन कैल गेल अछि।[१०]

पाँचम गीत नेपाल राष्ट्रीय अभिलेखालय मे रक्षित 'रागभजन' संग्रह मे भेटैत अछि जाहि मे प्रवासगमनोद्यत नायकक नायिकाक प्रति उक्ति अछि।[११]

यैह उपर्युक्त चारिगोट स्रोत सँ सुकवि सदानन्दक पाँच गोट गीत उपलब्ध भेल अछि। भाव, भाषा ओ छन्दक दृष्टिञे ई गीत सभ अवश्ये आकर्षक ओ मनोहारी अछि। हमर विश्वास अछि जे जहिना जहिना मैथिलीक प्राचीन साहित्यक स्रोतक अनुसन्धान होइत जायत तहिना सुकवि सदानन्दक गीत सभ प्रकाश मे अबैत जाएत आ तैखन संभव अछि जे अन्धकाराच्छन्न परिचय पर किछु प्रकाश पड़ि सकत। एखन तँ सुकवि सदानन्दक एही पाँच गोट गीत सँ सन्तोष करए पड़त।

हम एतए क्रम सँ ओ पाँचो गीत प्रस्तुत कए रहल छी।

(१)

जय जय दुर्गे दुर्गति हारिनि सब सिधिकारिनि देवी।
भुगुति मुकुति दुहु दुखे विनु पाबिअ (तुअ) पद पङ्कज सेवी॥
विष्णु विरञ्चि विभावसु वासव शिव तुअ धरए धेआने।
आदि सकति भगवति भव भाविनि केओ न अन्त तुअ जाने॥

---

७ तत्रैव, पृष्ठ सं० १० (१७ख)-११ (१८क)।
८ तत्रैव पृष्ठ सं० ३० (४ख)।
९ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग-१, पृष्ठ २४१, टिप्पणी-१५२
१० भाषा गीत संग्रह—नेपाल राष्ट्रीय अभिलेखालय क्रमांक—६९६१, गीत संख्या-१०६
११ रागभजन संग्रह—नेपाल राष्ट्रीय अभिलेखालय, क्रमांक—१/३७९, गीत संख्या—२८

तनु अति सुन्दर मरकत मनि जनि तीनि नयन भुज चारी ।
शङ्ख चक्र शर कर धनु धारिनि शशि शेखर अनुसारी ।।
मनिमय कुण्डल हार मनोहर नूपुर घनहन वाजे ।
किङ्किनि रनरन सुललित कङ्कन भूषन विविध विराजे ।।
पञ्चानन वाहिनि दाहिनि होहु सुमरि महेश विमोही ।
सदानन्द कह चरन युगल तुअ सरन कएल जगजोही ।।[१२]

(२)

मनोक्ति गीतं ।। आसावरी ।।चो।।
देखहो गे माइ जोगि रङ्ग रसिआ ।
गोरि मुख हेरि हेरि हसए बिहुसिआ ।।
विभूति भूषण गिम फणिमणि शोभे ।
राजकुमारि कत लावए लोभे ।।
शिर शशधर करे डमरु वजावे ।
चञ्चल लोचन मनमथ भावे ।।
पुनु पुनु आवए हटल न माने ।
कवने परि वोलव वचन निदाने ।।
भनइ सदानन्द कर उछाहे ।
वड समुचित गोरि शंकर नाहे ।।[१३]

(३)

महादेव नृत्य गीतं ।। धनाश्री ।। ए ।।
भौरि भरमे अमिए वम चन्दा ।
वाघ जिविए रे वसह कर दन्दा ।।
कओने परि होएत नाट निरवाह ।
परम वेआकुल त्रिभुवन नाह ।। ध्रुवं ।।
शिरे सुरसरि भरे गेलि वढिआई ।
नयन हुतासन परशे मिझाई ।।
ससरि खसल फणि दिशे दिशे घुरे ।
तह्निके उपरे धस कातिक मजुरे ।।
सुकवि सदानन्द नितकर सेवा ।
देथु अभयवर शंकर देवा ।।[१४]

---

१२ रागतरंगिणी, पृ० ११२
१३ हरगौरी विवाह नाटक, पृष्ठ सं० १० (१७ख)-११ (१८क)
१४ तत्रैव, पृष्ठ सं० ३० (४ख)

(४)

वरडी ॥
जाइतेँ जमुना पार गे सखि।
भेटल नन्द कुमार ॥
पलटिओ न भेल निहारि।
भेलाहुँ सहजेँ गमारि ॥
वैरिनि भेल मोर लाज।
हठे हरु हरिक समाज ॥
तहिं षने सञो हिअ साल।
पडिलहुँ अनुसय जाल ॥
सुकवि सदानन्द गाव।
समय गेलेँ पछताव ॥[१५]

(५)

॥ मालव ॥ ए
जागह सुलाक्षनि छोटि अछ रएणी।
हम उठि समदह सारङ्ग नयनी ॥
तिन्ना एक समुह करह मुख अपना।
तोह हम दरशन होएत दहु शपना ॥
लाज नेवारि कहह किछु एहनी।
जिव अवलम्बि धरञो ताहि कहनी ॥
एत सुन सुन्दरि मुहहु न बोलइ।
नयनक नीर ढरिअ ढरि परइ ॥
सुकवि सदानन्द सकरुण भनइ।
दारुण विहि परदुख नहि जनइ ॥[१६]

---

१५ भाषा गीत संग्रह, गीत संख्या १०६
१६ रागभजन संग्रह, गीत सं० २८